बिहारी लाल और गागर में सागर

March 07, 2017

बिहारी लाल हिंदी साहित्य के जाने माने कवि थे। उनके बारे में कहा जाता था कि वो अपनी दोहो के माध्यम से गागर में सागर भरने में कुशल थे। यहाँ गागर में सागर से तात्पर्य है कि वो एक ही दोहे में पूरी कहानी कहने में समर्थ थे। उनके दोहो का संकलन "बिहारी सतसई" के नाम से विख्यात है। जिसके बारे में कहा जाता है।

सतसैया के दोहे , ज्यो नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगे,घाव करे गंभीर।।

"बिहारी सतसई" एक दोहा मैं यहाँ उदाहरण के रूप दे रहा हूँ।

"कहत नटत रीझत खीजत मिलत खिलत लजियात।
भरे भवन में करत है नैनन ही से बात।।

यहाँ नायक और नायिका किसी उत्सव में मिलते हैं। पूरा भवन लोगो से भरा हैं किन्तु नायक और नायिका आँखों ही आँखों से बात कर लेते है। नायिका पहले नायक की बात मान लेती फिर मना कर देती हैं। फिर वो रीझती और गुस्सा करती हैं। अंत में दोनों की आँखे मिलती और नायिका का खिल उठती और शर्मा जाती है। इस तरह वो दोनों लोगो से भरे भवन में भी केवल

Scanned with CamScanner

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय ।
सौंह करे, भौंहनु हंसे दैन कहे, नटि जाय ।।

इस दोहे में भगवान् कृष्ण और गोपियो के विनोद के कथा हैं। कृष्ण की बातो का आनंद लेने के लिए गोपियो ने कृष्ण की मुरली छुपा दी हैं। जब कृष्ण उनसे पूछते हैं तो वो लोग इनकार कर देती हैं। वो लोग कसम खा कर कहती हैं कि उन्होंने मुरली नहीं ली हैं पर उनकी आँख की भोएं कुछ अलग ही बात कहती हैं यानी उनकी आखो में एक शरारत छुपी हुई हैं जिसे कृष्ण भाँप लेते हैं। गोपिकाये उनकी मुरली वापस देने की बात तो करती है पर अंत में मुकर जाती हैं। कुछ विद्वान् गोपिकाओं की जगह राधा को लेकर इस प्रसंग का वर्णन करते हैं।

एक और दोहा काबिलेगौर हैं

मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई।
जा तन की झाईं परै श्यामु हरित दुति होई।।

इस दोहे के दो अर्थ हैं

१. मेरी दुःख (सांसारिक कष्ट) वही चतुर राधा करे जिनको देखकर भगवान् श्री कृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं

२. मेरी दुःख (सांसारिक कष्ट) वही चतुर राधा करे जिनके तन की छाया पड़ने पर भगवान् श्री कृष्ण का रंग हरा हो जाता हैं। यहाँ ये बात ध्यान देने योग्य है कि राधा गोरी(सुवर्ण) है और कृष्ण नीले रंग के हैं। इन दोनों रंग मिलकर हरा रंग बनाते हैं।

Scanned with CamScanner

बिहारी लाल हिंदी साहित्य के जाने माने कवि थे। उनके बारे में कहा जाता था कि वो अपनी दोहो के माध्यम से **गागर में सागर** भरने में कुशल थे। यहाँ **गागर में सागर** से तात्पर्य है कि वो एक ही दोहे में पूरी कहानी कहने में समर्थ थे। उनके दोहो का संकलन "**बिहारी** सतसई" के नाम से विख्यात है।

Scanned with CamScanner

^ साहित्य में स्थान

किसी कवि का यश उसके द्वारा रचित ग्रंथों के परिमाण पर नहीं, गुण पर निर्भर होता है। बिहारी के साथ भी यही बात है। अकेले सतसई ग्रंथ ने उन्हें हिंदी साहित्य में अमर कर दिया। श्रृंगार रस के ग्रंथों में बिहारी सतसई के समान ख्याति किसी को नहीं मिली। इस ग्रंथ की अनेक टीकाएं हुईं और अनेक कवियों ने इसके दोहों को आधार बना कर कवित्त, छप्पय, सवैया आदि छंदों की रचना की। बिहारी सतसई आज भी रसिक जनों का काव्य-हार बनी हुई है।

कल्पना की समाहार शक्ति और भाषा की समास शक्ति के कारण सतसई के दोहे गागर में सागर भरे जाने की उक्ति चरितार्थ करते हैं। उनके विषय में ठीक ही कहा गया है -

सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर॥

अपने काव्य गुणों के कारण ही बिहारी महाकाव्य की रचना न करने पर भी महाकवियों की श्रेणी में गिने जाते हैं। उनके संबंध में स्वर्गीय राधाकृष्णदास जी की यह संपत्ति बड़ी सार्थक है -

यदि सूर सूर हैं, तुलसी शशी और उडगन केशवदास हैं तो बिहारी उस पीयूष वर्षी मेघ के समान हैं जिसके उदय होते ही सबका प्रकाश आछन्न हो जाता है।

Scanned with CamScanner